देवी-देवताओंकी उपासना : शिव – खण्ड १

भगवान शिवसम्बन्धी अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला २९, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

फरवरी २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९५ लाख ९६ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ ‘सनातन संस्था’की स्थापना

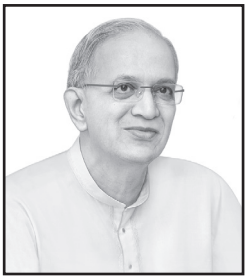

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए ‘गुरुकृपायोग’ साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १.२.२०२४ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५१ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक ‘सनातन प्रभात’के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. ‘हिन्दू राष्ट्र’की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – **www.Sanatan.org**)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ।।
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ।। – जयंत बाळाजी आठवले
१७.५.१९९८

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

卐 भूमिका ८

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ **२. कुछ नामोंका आध्यात्मिक अर्थ** १०

३. मूर्तिविज्ञान १२

* पिण्डीके विविध प्रकार १४

४. सनातन-निर्मित 'शिवजीका सात्त्विक चित्र व नामजप-पट्टी' २७

५. योगतज्ञ दादाजी वैशंपायन द्वारा प.पू. डॉक्टरजीको दिए शिवजी के त्रिमितीय चित्रमें परिवर्तन होना और वह सजीव लगना ३४

६. शिवके रूप : रुद्र, कालभैरव, वीरभद्र, भैरव (भैरवनाथ), वेताल, भूतनाथ, नटराज एवं किरात ३९

७. परिवार : पत्नी, पुत्र, शिवगण, शिवदूत एवं वाहन (नंदी) ४७

८. विशेषताएं ५१

* दैहिक एवं भौतिक विशेषताएं (धूसर रंग, तीसरा नेत्र आदि) ५२

* आध्यात्मिक विशेषताएं ५४

९. कार्य ५६

१०. **शिवलोक एवं निवास** ५९

११. **शिवजीके प्रसिद्ध स्थान :** बारह ज्योतिर्लिंग, अमरनाथ व काशी ६०

१२. **तन्त्रशास्त्र (शक्तिसे सम्बन्धित शास्त्र)** ६१

१३. **शिव एवं शक्ति :** शक्तिके बिना शिवद्वारा कार्य सम्भव न होना ६२

१४. **अनुभूति** ६४

卐 **प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें !** ६६

卐 **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी** ६९

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनकी समर्थक भूमिका !

हिन्दी भाषामें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ा । इससे उसकी सात्त्विकता घट जाती है । संस्कृत भाषा देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्ह जोडती है । वर्तमान कालका उदाहरण लें, तो अंग्रेजी भाषामें भी बिन्दुका प्रयोग नहीं किया जाता; तथापि पूरे संसारमें इस भाषाके प्रयोगमें कोई बाधा नहीं आती ।

''कारकचिन्हको धातुसे जोडना ही उचित है ! संस्कृतमें 'रामस्य धनुष्यः' लिखते हैं । इसलिए 'रामका धनुष' ही उचित है । 'राम का धनुष' लिखनेका अर्थ है, रामको धनुषसे अलग करना ! रामका धनुष उनके साथ ही होना चाहिए !''

– डॉ. लालचंद तिवारी, एक प्रमुख अधिकारी, 'गीता प्रेस' गोरखपुर

संस्कृत भाषासमान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्तिको इसका आचरण कर 'स्व-भाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाना चाहिए !

– (सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

भूमिका

किसी देवतासे सम्बन्धित अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी प्राप्त होनेपर, हमारी उनके प्रति श्रद्धा बढनेमें सहायता होती है । स्वाभाविक ही 'श्रद्धा' भावपूर्ण उपासना हेतु सहायक है । भावपूर्ण उपासना अधिक फलदायी होती है । इस दृष्टिसे प्रस्तुत ग्रन्थमें शिवसम्बन्धी उपयुक्त ऐसी अध्यात्म-शास्त्रीय जानकारी दी है, जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं है ।

शिवके कुछ नामोंका अर्थ; उनकी दैहिक विशेषताओंका - गंगा, तीसरा नेत्र, नाग, भस्म, रुद्राक्ष आदि का आध्यात्मिक अर्थ; उनका कार्य एवं आध्यात्मिक विशेषताएं - महातपस्वी, भूतोंके स्वामी, विश्वकी उत्पत्ति करनेवाले; उनके विविध रूप - रुद्र, कालभैरव, नटराज आदि; ज्योतिर्लिंग आदि से सम्बन्धी सैद्धान्तिक जानकारी देनेके साथ-साथ भस्म लगाना, नंदी की सींगोंसे शिवलिंगके दर्शन करना, शिवजीको बेल एवं अक्षत चढाना; परन्तु हल्दी-कुमकुम न चढाना, ऐसी उपासनासम्बन्धी प्रायोगिक जानकारी भी शास्त्रसहित दी गई है । सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सकता कि शृंगदर्शन, शिवजीको बिल्वपत्र चढाना, अभिषेक करना आदि कृत्योंके समय सूक्ष्म स्तरपर निश्चितरूपसे क्या प्रक्रिया होती है। सनातनके कुछ साधकोंमें यह क्षमता विकसित हुई है । उनके द्वारा किए 'सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी परीक्षण' एवं रेखांकित 'सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्र' इन ग्रन्थोंकी एक अनोखी विशेषता है।

शिवभक्तोंके लिए तथा किसी संप्रदायके अनुसार शिवजीकी साधना करनेवालोंके लिए यह अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी निश्चित ही उपयुक्त होगी; परन्तु सर्वसाधारण व्यक्ति इस सन्दर्भमें आगे दिए नियमोंको ध्यानमें रखे । कुछ लोगोंको रामायण पढनेपर श्रीरामकी एवं देवीमाहात्म्य पढनेपर देवीकी उपासना करनेका मन करता है । उसी प्रकार यह ग्रन्थ पढनेपर शिवकी उपासना करनेकी इच्छा भी किसीकी हो सकती है । ऐसे व्यक्तियोंको ध्यान रखना चाहिए कि शिवकी उपासनासे सबकी शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति नहीं होती । किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नतिके लिए शिव आदि देवता यदि अनुकूल हों, तो ही उनकी उपासनासे अधिक लाभ होता

है; अन्यथा तीव्र साधना करनेपर भी बहुत ही अल्प उन्नति हो पाती है । केवल महापुरुष अर्थात आध्यात्मिक दृष्टिसे उन्नत पुरुष ही बता सकते हैं कि किसी व्यक्तिके लिए शिवकी उपासना आवश्यक है अथवा नहीं; यह सामान्य मनुष्य नहीं समझ सकता । इसलिए सामान्य मनुष्यको ये ग्रन्थ शिव सम्बन्धी जानकारीके लिए ही पढने चाहिए । शिवकी अनुभूति पानेकी दृष्टिसे साधनाका पहला चरण है अपने कुलदेवताका नामजप । यह जप, 'श्री ... (कुलदेवी/कुलदेवके नामका चतुर्थीका प्रत्यय) ... नमः', इस पद्धतिसे करें। (जपसम्बन्धी अधिक जानकारी सनातनके ग्रन्थ 'नामजपका महत्त्व एवं लाभ'में दी है ।) आगे चलकर यदि गुरु शिवका नामजप करनेके लिए कहें, तो यहां दी जानकारी शिवके प्रति श्रद्धा बढानेमें सहायक होगी। अन्य लोगोंको यह ग्रन्थ पढनेपर शिवसम्बन्धी कुछ नई जानकारी मिलेगी।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि ये ग्रन्थ पढकर शिवजीके प्रति उनके उपासकोंकी श्रद्धा अधिक दृढ हो एवं प्रत्येकको ही अधिकाधिक साधना करनेकी प्रेरणा मिले । – **संकलनकर्ता**

सनातनके ग्रन्थोंमें उपयोग की गई संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषाकी कारणमीमांसा

१. सनातनके ग्रन्थोंमें शुद्ध (संस्कृतनिष्ठ) हिन्दीका उपयोग किया जाता है। पाठकोंकी सुविधाके लिए कठिन शब्दोंके आगे कोष्ठकमें वैकल्पिक अन्य भाषाके शब्दका उल्लेख किया जाता है।

२. हिन्दी राष्ट्रभाषा होनेके कारण विविध प्रान्तोंमें एक ही अर्थमें एक से अधिक शब्द प्रचलित होते हैं। अनेक बार शब्दकी वर्तनीमें अन्तर होता है। इन कारणोंसे पाठकोंको भाषा कठिन अथवा अशुद्ध प्रतीत न हो, इस हेतु ग्रन्थमें विभिन्न स्थानोंपर हमने कोष्ठकमें वैकल्पिक शब्द देनेका प्रयास किया है; तथापि पृष्ठसंख्या बढनेके भयसे प्रत्येक बार ऐसा करना सम्भव नहीं।

– (सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. जयंत आठवले